नाम - डॉ. रोशनी मिश्रा

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पदनाम - सहायक प्राध्यापक

विभाग - हिंदी

शीर्षक - आचार्य कुंतक का वक्रोक्ति सिद्धांत

'आचार्य कुंतक का वक्रोक्ति सिद्धांत'

'वक्रोक्ति' दो शब्दों के मेल से बना है – वक्र + उक्ति। वक्रोक्ति का सामान्य अर्थ है – टेढ़ी उक्ति। लोक व्यवहार में इसका सामान्य अर्थ है – काकु-छल या हास-परिहास के लिए की गई व्यंग्य या विनोदपूर्ण बात। साहित्य के क्षेत्र में इसका विशिष्ट अर्थ है। किसी भाव को सीधे स्पष्ट शब्दों में न कहकर घुमा फिराकर सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करना। ~~सामान्य~~ दूसरे शब्दों वक्रोक्ति वह अभिव्यंजना शक्ति है, जो सामान्य कथन को आकर्षक और चमत्कारपूर्ण बना देती है। 'अमरुकशतक' में व्यंगात्मक उक्ति के लिए 'वक्रोक्ति' शब्द का प्रयोग हुआ है।

वक्रोक्ति सिद्धांत के प्रतिपादक आचार्य कुंतक हैं। उन्होंने अपने ग्रंथ 'वक्रोक्ति जीवितम्' में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा कहा। वक्रोक्ति की परिभाषा करते हुए वे कहते हैं – 'वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्य भंगी भणितिरुच्यते।' अर्थात वैदग्ध्यपूर्ण विचित्र उक्ति ही वक्रोक्ति है। 'वैदग्ध्य' का अर्थ है – विलक्षणता, 'भंगी' का तात्पर्य है – भंगिमा और 'भणिति' का अर्थ है – कथन। इस प्रकार वक्रोक्ति का अर्थ हुआ – कथन की वह भंगिमा, जो विलक्षणता से युक्त हो।

काव्य शास्त्र में वक्रोक्ति का प्रयोग प्रारंभ से होता रहा है। भामह, दंडी आदि अलंकारवादी आचार्यों ने वक्रोक्ति का निरूपण करने का प्रयास किया है। भामह के अनुसार – 'लोकातिक्रांत गोचरं वचनं', अर्थात लोक की साधारण कथन प्रणाली से भिन्न उक्ति ही

वक्रोक्ति है। आचार्य दण्डी ने काव्य को दो भागों में विभक्त किया है - ① स्वभावोक्ति और ② वक्रोक्ति। वक्रोक्ति को वे अर्थालंकारों का सामूहिक रूप मानते हैं। आगे चलकर उन्होंने वक्रोक्ति को अर्थालंकारों में से एक विशेष अलंकार माना है। वामन ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है - 'सादृश्यात् लक्षणा वक्रोक्ति:' अर्थात सादृश्य पर आश्रित लक्षणा ही वक्रोक्ति है। आचार्य रुद्रट ने वक्रोक्ति को एक अलंकार मानकर इसके दो भेद बताये हैं — ① काकु वक्रोक्ति और श्लेष - वक्रोक्ति। आचार्य आनंदवर्धन और अभिनव गुप्त ने क्रमश: इसे अतिशयोक्ति का पर्याय और उत्कृष्ट पद रचना माना है।

वक्रोक्ति का सौंदर्य शब्द और अर्थ दोनों में निहित होता है। अर्थात उक्ति की विचित्रता शब्द में भी होती है और अर्थ में भी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि शब्द और अर्थ अलंकार्य होते हैं और उनको अलंकृत करने वाला तत्व वक्रोक्ति है।

वक्रोक्ति के भेद

कुंतक ने ने वक्रोक्ति के छ: भेद माने हैं। — ① वर्ण - विन्यास वक्रता ② पद पूर्वार्द्ध वक्रता ③ पद परार्ध वक्रता ④ वाक्य वक्रता ⑤ प्रकरण वक्रता ⑥ प्रबंध वक्रता।

① वर्ण - विन्यास वक्रता - व्यंजन वर्णों की ऐसी व्यवस्था एवं विन्यास जिससे सौंदर्य का विधान हो, वर्ण विन्यास वक्रता कहलाती है। 'यमक' और अनुप्रास इसी के अंतर्गत आते हैं। वर्णों की ~~वक्रता~~ कर्णप्रियता एवं बार बार आवृत्ति इसी वक्रता का परिणाम है।

उदाहरणार्थ - एक वर्ण की आवृत्ति

कनक कोमल केसर कलियाँ।
श्याम गिरा गुण की गलियाँ॥

(२) पद पूर्वार्द्ध वक्रता — पद से तात्पर्य सविभक्तिक शब्द से है। पद के दो भाग किये जा सकते हैं - प्रकृति और प्रत्यय। प्रकृति पद पूर्वार्द्ध होती है और प्रत्यय पद परार्द्ध। वह वक्रता जो पद के पूर्वार्द्ध (अर्थात) प्रकृति पर आधारित होती है, पद पूर्वार्द्ध वक्रता कहलाती है। इसे प्रकृति वक्रता भी कहते है। कुंतक ने इसके नौ भेद माने हैं। यह वक्रता रूढ़ि लिंग, क्रिया, भाव, वृत्ति, विशेषण, उपचार आदि पर आधारित होती है।

उदाहरणार्थ - रूढ़ि वक्रता अर्थात परंपरागत मान्यता का वैचित्र्य — 'मेरा राम रमा है मुझमें, मैं चाहे मणि हूँ या काँच।'

विशेषण वक्रता - जहाँ विशेषण के विशेष प्रयोग के कारण कार्य या कारण में चमत्कार की वृद्धि होती है जैसे — 'मूक स्तब्ध सज्जनता मेरी। कल - कल विकल विजनता॥'

(३) पद परार्द्ध वक्रता — पद के परार्द्ध में प्रत्यय रहता है। यह वक्रता इसी भाग में स्थापित की जाती है। इसे प्रत्यय वक्रता भी कहते हैं। इसके आठ भेद है — (1) काल वैचित्र्य वक्रता
(2) कारक वक्रता
(3) संख्या वक्रता
(4) पुरुष वक्रता
(5) उपग्रह वक्रता
(6) प्रत्यय वक्रता
(7) उपसर्ग वक्रता
(8) निपात वक्रता

उदाहरणार्थ - वचन वक्रता - इसमें वचन के विपर्यय अथवा एकवचन के स्थान पर बहुवचन और बहुवचन के स्थान पर एकवचन प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न किया जाता है -

जैसे - 'हमी भेज देती हैं रण में क्षात्र धर्म के नाते।

पुरुष वक्रता में - पुरुष विपर्यय के द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया जाता है अर्थात उत्तम पुरुष के स्थान पर मध्यम पुरुष और मध्यम पुरुष के स्थान पर उत्तम पुरुष के द्वारा चमत्कार की सृष्टि की जाती है। जैसे - " करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुस्काये।"

(4) वाक्य वक्रता - वाक्य वक्रता को वस्तु वक्रता या वाच्य वक्रता भी कहते हैं। यह कवि की प्रतिभा पर आश्रित होती है। अत: यह वक्रता भी विविध रूप में पाई जाती है। कुंतक ने इसके अंतर्गत अलंकारों का विवेचन किया है। आचार्य कुंतक ने वाक्य वक्रता सहज और आहार्य के आधार पर दो प्रकार की मानी है। सहज का अर्थ है - स्वाभाविक। इसमें कवि अपनी सहज प्रतिभा द्वारा वस्तुओं का वर्णन करके सहृदयों को आनंदित करता है। आहार्य का अर्थ है - निपुणता।

(5) प्रकरण वक्रता - प्रकरण का अर्थ - प्रसंग। प्रबंध काव्य में अनेक प्रसंग आते हैं। इन प्रसंगों के औचित्य को प्रभावशाली बनाना ही प्रबंध वक्रता कहलाता है। आचार्य कुंतक ने इसके आठ भेद बताये हैं -

(1) भावपूर्ण स्थिति की उद्भावना द्वारा पात्रों के चरित्र का उत्कर्ष करना।

(2) किसी काव्य प्रसंग में मौलिक उद्भावना

③ ऐतिहासिक तथ्य में चमत्कार का समावेश करना
④ मुख्य प्रसंग के लिए गौण प्रसंग की योजना करना
⑤ किसी कथावस्तु के स्थल विशेष में प्रसंग विशेष द्वारा सौंदर्य की वृद्धि करना
⑥ पूर्व प्रकरणों के बाद के प्रकरणों से जोड़ना
⑦ सामान्य विषय वस्तु का अतिरंजित वर्णन
⑧ वस्तु योजना और प्रकरण विभाजन आदि में संतुलन स्थापित करना

⑥ प्रबंध वक्रता — जब संपूर्ण प्रबंध में वक्रता होती है, तब उसे प्रबंध वक्रता कहते हैं। प्रबंध वक्रता के अंतर्गत प्रबंधात्मक काव्य रूपों का वास्तु कौशल अपेक्षित होता है। प्रबंध का योग सर्वाधिक व्यापक है। सभी प्रकार की वक्रताओं का सहयोग इसमें अपेक्षित होता है। जैसे मूल रस में परिवर्तन - मैथिली शरण गुप्त का 'साकेत' इसका उदाहरण है। रामायण के प्रधान रस वीर के स्थान पर 'साकेत' में करुण रस की उद्भावना की गई है।

इस प्रकार आचार्य कुंतक द्वारा प्रतिपादित वक्रोक्ति सिद्धांत काव्यशास्त्र का एक महत्वपूर्ण एवं मौलिक सिद्धांत है।